प्राक्कथन

हिन्दी कहानी का साहित्यिक इतिहास अधिक प्राचीन नहीं है इसका आरम्भिक इतिहास विभ्रान्त-कल्पना और तिलस्मी-परिवेश के माया जाल में जन्म लेकर कुछ एक दशकों तक समाज-निरपेक्ष होकर मानवीय जीवन के मूल्यों से नितान्त तटस्थ बना रहा । इसका जीवन बोध आचार्य शुक्ल जी की कहानी से आरम्भ हुआ और स्वर्गीय प्रेमचन्द के कुशल हाथों से इसका स्वरूप उभर आया । हिन्दी कहानी और स्वर्गीय प्रेमचन्द एक ही साहित्यिक युग के पर्यायवाची नाम हैं । प्रेमचन्द जी ने हिन्दी कहानी के सम्पूर्ण कलेवर को एक भव्य स्वरूप प्रदान किया और हिन्दी कहानी साहित्य को समाज - सापेक्ष संदर्भ में अनुस्यूत करके इसके बहुमुखी आयाम का सृजन स्वयं किया । प्रेमचन्द का लिखा कहानी साहित्य आकार में विशाल, भाव-बोध में पारदर्शी, शिल्प में सुदक्ष, और जीवन की विकट पहेलियों के संस्तरण में अद्वितीय है । भाषा के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द का कहानी साहित्य आज भी अपने में बेजोड है ।

प्रेमचन्दोत्तर युग में हिन्दी कहानी साहित्य नई कहानी, अकहानी, सचेतक कहानी, जनवादी कहानी और न जाने कितने शीर्षकों और नामकरणों में जन्मी, पनपी, उभरी और प्रौढ़ होती गई ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी तथ्य-परक जीवन के सूक्ष्म-तन्तुओं का ताना-बाना बुनती हुई आगे की ओर बढ़ती रही । सातवें दशक की हिन्दी कहानी इस वास्तविक जीवन का 'नग्न यथार्थ' स्वरूप है । इसका केन्द्र-बिन्दु आधुनिक मानव और इसका समाज है । आज की हिन्दी कहानी व्यक्ति के सूक्ष्म अन्तः बाह्य जीवन की कोषकाओं को उभारती है तथा जिस परिवेश में आज का यह व्यक्ति जी रहा है वही इसका प्रमुख क्षेत्र है । यांत्रिक परिवेश के क्लान्त व्यक्ति के जीवन का नग्न-यथार्थ सातवें दशक की कहानी एक प्रमुख वाहिका है, यही कारण है कि मैंने अपने शोध-कार्य के लिए "सातवें दशक की हिन्दी कहानियों में नया यथार्थ" विषय का चयन किया । इस दशक की कहानी में जो एक बिखरा, टूटा, संवेदना की काया में जूझता और खण्डों में बंटता यथार्थ आया है उसे अपने शोध-कार्य में समेट कर इसे एक नये आयाम में और नवीन विधा में आंकने का अकिंचन प्रयास है ।

इस समूचे शोध अध्ययन को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है ।

प्रथम अध्याय में प्रेमचन्द पूर्व की हिन्दी कहानी से लेकर सातवें दशक से पूर्व तक की हिन्दी कहानी में आई हुई संवेदना को समेटने का प्रयास किया है ।

द्वितीय अध्याय में नवीन यथार्थ की साहित्यिक सीमाओं को छूने का यथाशक्य प्रयास है । इस यथार्थ के समाज-सापेक्ष परिदृश्य को समाज-शरास्त्रीय विधा में आँकने का प्रयत्न किया ।

तृतीय अध्याय में सातवें दशक की हिन्दी कहानी के साहित्यिक विकास को समेटने का प्रयत्न किया गया है । इसके अतिरिक्त पूर्व पृष्ठभूमि तथा समसामयिक परिवेश पर विचार किया गया है । साथ में इस दशक की प्रमुख विशेषताओं को भी लिया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में इस दशक की प्रमुख कहानीकारों की कहानियों में नव-यथार्थ-बोध पर प्रकाश डाला गया है ।

पांचवे अध्याय में सातवें दशक की हिन्दी कहानी की शैली पर प्रकाश डाला गया है । भाषा के नव-प्रयोग, नव-बिम्ब, मुहावरे और कहावतें तथा शब्द चित्रों का विवेचन किया गया है ।

छठे अध्याय में सातवें दशक की हिन्दी कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है और विगत यथार्थ का पुनर्मूल्यांकन किया गया है । इसके उपरान्त उपसंहार के अन्तर्गत कुछ एक निष्कर्ष तथा संभाव्य

सम्भावनाओं का आकलन करने का प्रयत्न किया गया है ।

मैं श्रद्धानत हूँ डॉ0 श्रीमती मोहिनी कौल ॥अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग॥ के प्रति, जिन्होंने मुझे इस विषय पर कार्य करने की प्रेरणा देकर अनुगृहीत किया । शोध अवधि में उनकी गहन आत्मीयता मेरे लिए उज्जवल पथ-प्रदर्शनी वरदान प्रमाणित हुआ, अतः उनके प्रति आभार व्यक्त करना स्वयं में साभार है ।

प्रबन्ध का प्रणयन डॉ0 त्रिलोकीनाथ गंजू के निर्देशन में हुआ है । अध्ययन के दौरान उन्होंने अपनी कृपा एवं स्नेह से मुझे जो दिशा निर्देशन एवं प्रेरणा प्रदान की है, उसके लिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ ।

अन्त में मैं उन प्रेरणापरक हितैषियों को धन्यवाद देना अपना नैतिक दायत्व समझती हूं जिन्होंने मुझे इस शोध के कार्य में प्रोत्साहित किया ।

वीणा कौल
अनुसन्धित्सु

निर्मला एकादशी
विक्रमाब्दि 2043.